**Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)**
© VIJACT |Vol.2, Issue 6, Jun 2026, pp. 10-17 | ISSN: 3139-1656 (Online)
**DOI:** https://doi.org/10.65785/vijact.v2i6.52
Available online at: https://vijact.com/

# जनांकिकीय चरों के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन का अध्ययन

**प्रो. मधु गुप्ता [1] एवं सुश्री शीतल [2]**

*[1] विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग, कुँ. आर. सी. महिला डिग्री कॉलेज, मैनपुरी*
*[2] एम. ए. (छात्रा), कुँ. आर. सी. महिला डिग्री कॉलेज, मैनपुरी*

**Article Info**

*Article history:*
Received Jun 02, 2026
Accepted Jun 12, 2026
Published Jun 30, 2026

*Keywords:*
जनांकिकीय चर
अकादमिक विलंबन
मानसिक स्वास्थ्य
आत्म-नियंत्रण

**ABSTRACT**

*प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य जनांकिकीय चरों के परिप्रेक्ष्य में अकादमिक विलंबन का अध्ययन करना था। शोध अध्ययन हेतु मैनपुरी जिले में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के 120 विद्यार्थियों (60 छात्र एवं 60 छात्राओं) का आकस्मिक प्रतिदर्श विधि द्वारा चयन किया गया। अकादमिक विलंबन के मापन हेतु गुप्ता एवम् बशीर (2018) द्वारा निर्मित एकेडेमिक प्रोक्रास्टिनेशन स्केल के हिंदी रूपांतरण का प्रयोग किया गया। प्रदत्त विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन व क्रांतिक अनुपात सांख्यकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया। प्रदत्त विश्लेषणोपरांत चयनित जनांकिकीय चरों, यथा- संकाय, जातिवर्ग, परिवार की प्रकृति, निवास क्षेत्र व मोबाइल की उपलब्धता का विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन पर कोई भी सार्थक प्रभाव परिलक्षित नहीं हुआ।*

*This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.*

**Corresponding Author:**
**प्रो. मधु गुप्ता**
**Email:** madhuguptampi@gmail.com

## 1. प्रस्तावना:

उच्च शिक्षा, शिक्षा का वह रूप है जहाँ ज्ञान का गहराई से अध्ययन और विश्लेषण किया जाता है। इसके माध्यम से व्यक्ति शोध, नवाचार और आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित करता है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में उच्च शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है क्योंकि वह व्यक्ति को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने योग्य बनाती है। उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण चरण में छात्रों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिनमें से एक प्रमुख समस्या है 'अकादमिक विलंबन' (Academic procrastination)। यह वह प्रवृत्ति है जिसमें छात्र अपने शैक्षिक कार्यों को बार-बार टालते हैं। यह वह व्यवहार है जिसमें छात्र शिक्षा से जुड़े कार्यों को समय पर करने से बचते हैं जिसके परिणामस्वरूप असफलता, असंतोष, चिंता और तनाव उत्पन्न होता है। अकादमिक विलंबन एक अवांछित प्रवृत्ति है, जिसमें व्यक्ति किसी शैक्षणिक कार्य को शुरू करने या उसे पूरा करने में अनावश्यक रूप से देरी करता है। (यंग, 2010)

अकादमिक विलंबन एक ऐसी समस्या है, जो विभिन्न क्षेत्रों में देखी जाती है, जैसे—परीक्षा की तैयारी , गृहकार्य , प्रोजेक्ट कार्य या शैक्षणिक कार्यों से संबंधित गतिविधियों में देरी करना आदि। (ड्राइडेन, 2012) अकादमिक विलंबन के कई कारण हो सकते हैं। इनमें प्रमुख हैं- समय प्रबंधन में कमी,कार्य में अरुचि, असफलता का भय, आत्मविश्वास में कमी तथा तकनीकी आकर्षण आदि। यद्यपि अकादमिक विलंबन का प्रभाव शैक्षणिक प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य और करियर विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है।जो छात्र लगातार कार्यों को टालते रहते हैं वे समय पर अपने लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाते, जिससे उनका आत्मविश्वास कम

हो जाता है। जरीन,सोहरब अबदी एवं अन्य (2020) ने अपने शोध में अकादमिक विलंबन तथा स्वनियमन के मध्य नकारात्मक सहसंबंध पाया।

जब विद्यार्थी लगातार अपने कार्यों को टालते हैं तो उनकी सीखने की प्रक्रिया बाधित होती है, जिससे उनकी दक्षता एवं कौशल का विकास अधूरा रह जाता है। आत्म-नियंत्रण की कमी भी विलंबन को बढ़ावा देती है, क्योंकि विद्यार्थी तात्कालिक सुख देने वाली गतिविधियों, जैसे- मोबाइल चलाना, सोशल मीडिया का उपयोग करना या मनोरंजन करना आदि को शैक्षणिक कार्यों की अपेक्षा अधिक प्राथमिकता देने लगते हैं। अकादमिक विलंबन अनेक सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत कारकों से प्रभावित होता है। जनांकिकीय चर, विद्यार्थियों के व्यवहार एवं अध्ययन आदतों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनांकिकीय चरों के रूप में निम्न चरों को सम्मिलित किया गया है-

1. **संकाय-** विज्ञान व कला वर्ग के विद्यार्थी।
2. **जाति वर्ग-** सामान्य, पिछड़ा व अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र व छात्राएं।
3. **परिवार की प्रकृति-** एकाकी एवम् संयुक्त परिवार।
4. **निवास क्षेत्र-** ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी।
5. **मोबाइल की उपलब्धता-** विद्यार्थियों के व्यक्तिगत (Personal) मोबाइल व परिवार मे एक (Common) मोबाइल जिसे सभी परिवारीजन प्रयोग करते हैं, से है।

विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों में अध्ययन का दबाव, पाठ्यक्रम की प्रकृति एवं शैक्षिक अपेक्षाएँ भिन्न होती हैं, जिसके कारण अकादमिक विलंबन के स्तर में अंतर पाया जाना स्वाभाविक है। इसी प्रकार जाति वर्ग सामाजिक एवं शैक्षिक अवसरों को प्रभावित करता है जो विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्तियों पर प्रभाव डाल सकता है।

परिवार की प्रकृति भी विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। संयुक्त और एकल परिवारों में मिलने वाला पारिवारिक सहयोग, अनुशासन एवं निगरानी का स्तर अलग-अलग होता है जिससे विद्यार्थी की कार्य करने की आदतों में भिन्नता आ सकती है। निवास क्षेत्र, जैसे- ग्रामीण व शहरी परिवेश, शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता, अध्ययन वातावरण तथा तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता भी किसी न किसी रूप में अकादमिक विलंबन से संबंधित है। विद्यार्थियों में विलंबन की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब वे अपने आवश्यक कार्यों को जानते हुए भी उन्हें समय पर पूरा नहीं कर पाते। प्रारंभ में यह एक साधारण आदत की तरह होती है, लेकिन धीरे-धीरे यह व्यवहारिक प्रवृत्ति का रूप ले लेती है।

## 2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन का अध्ययन करना।
2. जाति वर्ग के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन का अध्ययन करना।
3. एकाकी एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन का अध्ययन करना।
5. मोबाइल की उपलब्धता के संदर्भ में विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन का अध्ययन करना।

## 3. अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन में सार्थक अंतर नहीं हैं।
2. जाति वर्ग का विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन पर सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।
3. एकाकी एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन में सार्थक अंतर नहीं है।

4. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन में सार्थक अंतर नहीं है।

5. व्यक्तिगत (Personal)व साझा (Common) मोबाइल की उपलब्धता वाले विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन में सार्थक अंतर नहीं है।

## 4. सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

- **जरीन, सोहरब अबदी एवं अन्य (2020)** के शोध अध्ययन में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में अकादमिक विलंबन एवं असफलता के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया। जबकि अकादमिक विलंबन तथा स्वनियमन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया। इसके अतिरिक्त छात्राओं की तुलना में छात्रों में उच्च स्तर का अकादमिक विलंबन व निम्न स्तर का असफलता का भय एवम् स्व- नियमन दृष्टिगोचर हुआ।
- वारालक्ष्मी, एम. एवं रेड्डी बी. एस. कुमार (2020) ने अपने शोध अध्ययन में कॉलेज के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन पर शैक्षिक चिंता, शैक्षिक तनाव एवं शैक्षिक आत्मा प्रभावकारिता का सार्थक प्रभाव पाया गया। अन्य शब्दों में, उच्च शैक्षिक चिंता एवं शैक्षिक तनाव वाले विद्यार्थियों में उच्च स्तर का अकादमिक विलंबन दृष्टिगोचर हुआ ।इसके विपरीत निम्न शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता वाले विद्यार्थियों में उच्च स्तर का अकादमिक विलंबन पाया।
- जोश, लिया एवम् विजयन,दीप्थी (2021) ने अपने शोध अध्ययन में स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों मे विलंबन तथा सामाजिक प्रतिक्रिया केंद्र बिन्दु के बीच सार्थक एवम् सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अन्य शब्दों में, बाह्य सामाजिक प्रतिक्रिया केंद्र बिन्दु वाले विद्यार्थियों में उच्च स्तर का विलंबन दृष्टिगोचर हुआ।
- गोहेंन, रश्मि रेखा एवम् गोगोई, सम्प्रीति (2021) ने अपने शोध अध्ययन में 68.9% विद्यार्थियों में अकादमिक विलंबन का स्तर उच्च था क्योंकि वे अपने कार्य के लिए अपने सहपाठी पर निर्भर थे अर्थात् उनमें निर्भरता (Dependency) की प्रवृत्ति उच्च स्तर की पायी गयी। तथा 72.8% विद्यार्थियों में निम्न स्तरीय अकादमिक विलंबन दृष्टिगोचर हुआ क्योंकि उनमें अंतिम समय में कार्य करने का उत्साह अर्थात् जोखिम लेने (Risk taking) की प्रवृत्ति परिलक्षित हुई।
- मोहन, नयन एवम् पी. वी. अथीरा (2023) ने अपने शोध अध्ययन में युवा वयस्कों में विलंबन,समय प्रबंधन व आत्म- नियंत्रण के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया गया। अर्थात् विलंबन व समय प्रबंधन के मध्य सार्थक नकारात्मक, जबकि विलंबन व आत्म – नियंत्रण के मध्य सार्थक सकारात्मक सहसंबंध पाया।
- सक्सेना, शिल्पी एवं चंद्रा सतीश (2024) ने अपने शोध अध्ययन में ज्यादातर कॉलेज विद्यार्थियों में अकादमिक विलंबन का स्तर औसत (40%) तथा औसत से निम्न (25%) पाया गया। लगभग 10% विद्यार्थी निम्न तथा उच्च स्तर के अकादमिक विलंबन में समान रूप से पाए गए अतः छात्र एवं छात्राओं के अकादमी विलंबन व्यवहार में सार्थक अंतर पाया गया। अर्थात् छात्रों की तुलना में छात्राओं में उच्च स्तर का अकादमिक विलंबन दृष्टिगोचर हुआ। इसके विपरीत ग्रामीण व शहरी, एकल व संयुक्त तथा शैक्षणिक व व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के कॉलेज विद्यार्थियों के बीच अकादमिक विलंबन व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- भाटी, खगेश्वर एवं अन्य (2024) ने अपने शोध अध्ययन में कॉलेज विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन और शैक्षिक निष्पादन के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध तथा यौन भिन्नता के संदर्भ में भी अकादमिक विलंबन में कोई सार्थक अंतर दृष्टीगोचर नहीं पाया।
- समुद्रला, वेदश्री एवं रम्य, लेखा(2024) ने कॉलेज विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन का इंटरनेट की लत और तनाव की अनुभूति (प्रत्यक्षीकृत तनाव) के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया। फेरारी जोसेफ आर. एवं अन्य(2025) के शोध परिणाम दर्शाते हैं कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन व आवेगशीलता के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया।
- सेबस्टाइन एवं अन्य (2025) के शोध अध्ययन में मेडिकल छात्रों में अकादमिक विलंबन का प्रसार उच्च स्तर का प्राप्त हुआ। अर्थात् अधिकांश छात्र औसत (क्रमशः 39.3% व 57.5%) से उच्च स्तर के विलंबन का अनुभव कर रहे हैं।

- मालविका, जी. एवं अन्य (2025) ने विलंबन वाले विद्यार्थियों के मध्य समय-प्रबंधन सम्बन्धी व्यवहारों के संदर्भ में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया।

## 5. शोध विधि

प्रस्तुत शोध के संदर्भ में **वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया।

### 5.1 शोध चर

- **आश्रित चर-** अकादमिक विलंबन
- **स्वतंत्र चर-** जनांकिकीय चर-
    1. संकाय
    2. निवास क्षेत्र
    3. जाति वर्ग
    4. मोबाइल की उपलब्धता
    5. परिवार की प्रकृति

### 5.2 प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन के संदर्भ में प्रतिदर्श के रूप में मैनपुरी जिले में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के 17 से 22 आयु वर्ग के 120 विद्यार्थियों (60 छात्र एवं 60 छात्राओं) का **आकस्मिक प्रतिदर्श विधि** द्वारा चयनित किया गया। चयनित प्रतिदर्श का वितरण निम्न तालिका (1) में प्रदर्शित किया गया है-

**तालिका-1: चयनित प्रतिदर्श का वितरण**

| महाविद्यालय का नाम | विद्यार्थियों की संख्या | | योग |
|---|---|---|---|
| | छात्र | छात्राएं | |
| **कुँ. आर. सी. महिला डिग्री कॉलेज, मैनपुरी** | - | 60 | 60 |
| **श्री चित्रगुप्त पी. जी.कॉलेज, मैनपुरी** | 60 | - | 60 |
| **योग** | 60 | 60 | **120** |

**तालिका-2: जनांकिकीय चरों के परिप्रेक्ष्य में चयनित प्रतिदर्श का वितरण**

| क्रम सं॰ | वर्ग | | विद्यार्थियों की संख्या | प्रतिशत | कुल |
|---|---|---|---|---|---|
| **1.** | **संकाय** | **कला** | 60 | 50% | **120** |
| | | **विज्ञान** | 60 | 50% | |
| **2.** | **जाति वर्ग** | **सवर्ण** | 38 | 31.66% | **120** |
| | | **पिछड़ा** | 59 | 49.17% | |
| | | **अनुसूचित जाति** | 23 | 19.17% | |
| **3.** | **परिवार की प्रकृति** | **एकल** | 37 | 30.83% | **120** |
| | | **संयुक्त** | 83 | 69.17% | |
| **4.** | **निवास क्षेत्र** | **ग्रामीण** | 52 | 43.33% | **120** |
| | | **शहरी** | 68 | 56.67% | |
| **5.** | **मोबाइल की उपलब्धता** | **व्यक्तिगत** | 91 | 75.83% | **120** |
| | | **साझा** | 29 | 24.16% | |

तालिका (2) में प्रदर्शित प्रतिदर्श का जनांकिकीय चरों के संदर्भ में अध्ययन करने से स्पष्ट है कि विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों का प्रतिशत बराबर (50% -50% ) है। जाति वर्ग में सर्वाधिक प्रतिशत (49.17%) पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का है, तथा अनुसूचित जाति वर्ग

के मात्र (19.17%) विद्यार्थी हैं।परिवार की प्रकृति के संदर्भ में अध्ययन से स्पष्ट है कि संयुक्त परिवार के (69.17%) तथा एकल परिवार के मात्र (30.83%) विद्यार्थी हैं। निवास क्षेत्र के संदर्भ में अध्ययन करने से विदित होता है कि सर्वाधिक प्रतिशत (56.67%) शहरी विद्यार्थियों का है तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का प्रतिशत (43.33%) है। मोबाइल की उपलब्धता के संदर्भ में, जिन विद्यार्थियों के पास व्यक्तिगत मोबाइल था उनका प्रतिशत (75.83) है, तथा परिवार में एक मोबाइल (common ) का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत मात्र 24.16% है।

### 5.3 उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन के संदर्भ में विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन व्यवहार के मापन हेतु गुप्ता, सविता व बशीर, लियाकत (2018) द्वारा निर्मित एकेडमिक प्रोक्रेस्टिनेशन स्केल के हिंदी रूपांतरण का प्रयोग किया गया।

### 5.4 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, व क्रान्तिक अनुपात सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

## 6. परिणाम

एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषणोपरांत प्राप्त परिणामों को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है-

**तालिका -3: कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान , मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात**

| क्रम सं• | संकाय | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | विज्ञान | 60 | 73.23 | 15.44 | 1.054 | >.05 |
| 2. | कला | 60 | 76.13 | 14.69 | | |

तालिका 3 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि अकादमिक विलंबन की समस्या विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की तुलना में कला संकाय के विद्यार्थियों में उच्च स्तर की परिलक्षित हो रही है, क्योंकि कला संकाय के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन प्राप्तांकों का मध्यमान (76.13), विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन प्राप्तांकों के मध्यमान (73.23) से अधिक है।

उक्त दोनों समूहों के मध्यमानों में जो अंतर दृष्टिगोचर हो रहा है, वह सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है अथवा नहीं? इस हेतु क्रांतिक अनुपात की गणना की गई। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात (1.054) .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि विभिन्न मध्यमान मूल्यों में जो अंतर दिखाई दे रहा है, वह प्रतिदर्शजन्य परिवर्तनों के कारण से या संयोगजन्य त्रुटियों के कारण से उत्पन्न हुए हैं। अतः यह अंतर निरर्थक (असार्थक) अंतर है।

**तालिका- 4: जाति वर्ग के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान,मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात**

| क्रम सं• | जाति वर्ग | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | सवर्ण वर्ग | 38 | 76.53 | 14.895 | 0.809 | >.05 |
| | पिछड़ा वर्ग | 59 | 73.93 | 16.203 | | |
| 2. | पिछड़ा वर्ग | 59 | 73.93 | 16.203 | 0.110 | >.05 |
| | अनुसूचित वर्ग | 23 | 73.57 | 12.115 | | |
| 3. | सवर्ण वर्ग | 38 | 76.53 | 14.895 | 0.834 | >.05 |
| | अनुसूचित वर्ग | 23 | 73.57 | 12.115 | | |

उक्त तालिका (4) में प्रदर्शित परिणामों के अवलोकन से विदित होता है कि-

सवर्ण जाति के विद्यार्थियों में अकादमिक विलंबन, अन्य जाति वर्ग (पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग ) के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च स्तर का परिलक्षित हो रहा है, क्योंकि इस जाति वर्ग के अकादमिक विलंबन संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान मूल्य (76.53), अन्य जाति वर्ग के अकादमिक विलंबन संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान मूल्य (73.93) तथा (53.565) से अधिक है। विभिन्न जाति वर्ग के मध्यमान मूल्य में जो अंतर दृष्टिगोचर हो रहा है वह सार्थक है या नहीं? इसके लिए क्रांतिक अनुपात की गणना की गई जोकि .05 स्तर पर सभी जाति वर्ग के क्रांतिक अनुपात मान असार्थक पाए गए हैं। अतः परिलक्षित अंतर प्रतिदर्शजन्य कारणों से है व सांयोगिक है वास्तविक अंतर नहीं है।

**तालिका 5: एकल व संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन संबंधी प्राप्ताकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात**

| क्रम सं. | परिवार की प्रकृति | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | एकाकी | 37 | 72.14 | 19.74 | 0.920 | >.05 |
| 2. | संयुक्त | 83 | 75.46 | 14.41 | | |

उक्त तालिका (5) में प्रदर्शित परिणामों के निरीक्षण से स्पष्ट होता है कि-

संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में अकादमिक विलंबन की समस्या एकाकी परिवार के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च स्तर की है क्योंकि एकाकी परिवार के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान मूल्य (72.135) संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमान मूल्य (75.457) से कम है। परंतु उक्त दोनों समूह एकाकी एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन संबंधी व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि उक्त दोनों समूह के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान (0.920) .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। उक्त परिणाम की पुष्टि पूर्व में हुए शोध अध्ययन सक्सेना, शिल्पी एवं सक्सेना, चंद्रा (2020) से होती है। इन्होंने भी अपने शोध में एकल व संयुक्त परिवार के कॉलेज विद्यार्थियों के बीच अकादमिक विलंबन व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया।

**तालिका-6: ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन संबंधी प्राप्ताकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात**

| क्रम सं• | निवास क्षेत्र | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | ग्रामीण | 52 | 73.75 | 14.28 | 0.66 | >.05 |
| 2. | शहरी | 68 | 75.53 | 15.06 | | |

उक्त तालिका (6) में प्रदर्शित परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि-

शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में अकादमिक विलंबन का स्तर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च है। अर्थात् अकादमिक कार्यों को टालमटोल करने की प्रवृत्ति शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में अधिक है, क्योंकि उनके अकादमिक विलंबन प्राप्तांकों का मध्यमान (75.29), ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्यमान (73.75) से उच्च है। परंतु उक्त दोनों समूहों के मध्यमान में जो अंतर परिलक्षित हो रहा है, वह सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है, क्योंकि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन संबंधी प्राप्तांकों का क्रांतिक अनुपात मान (0.66) .05 स्तर पर असार्थक है। उक्त परिणामों की पुष्टि पूर्व में हुए शोध अध्ययन सक्सेना ,शिल्पी एवं चंद्रा (2020) से होती है।

**तालिका-7: मोबाइल की उपलब्धता के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन संबंधी प्राप्ताकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात**

| क्रम सं• | मोबाइल की उपलब्धता | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | व्यक्तिगत (Personal) | 91 | 73.174 | 17.166 | 1.027 | >.05 |
| 2. | साझा (Common) | 29 | 76.75 | 16.04 | | |

उक्त तालिका (7) में प्रदर्शित परिणाम दर्शाते हैं कि -

व्यक्तिगत मोबाइल उपयोग करने वाले विद्यार्थियों (73.174) में , साझा मोबाइल उपयोग करने वाले विद्यार्थियों (76.75) की तुलना में निम्न स्तर का अकादमिक विलंबन परिलक्षित हो रहा है। उक्त दोनों समूह के मध्यमान में जो अंतर दृष्टिगोचर हो रहा है, वह सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है या नहीं? क्रांतिक अनुपात की गणना की गई जो .05 स्तर पर असार्थक है। अतः उक्त दोनों समूह में परिलक्षित अंतर प्रतिदर्शजन्य कारणों से है व सांयोगिक है, वास्तविक अंतर नहीं है।

## 7. विवेचन एवं निष्कर्ष

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन पर, जनांकिकीय चरों, यथा-संकाय,जाति वर्ग,परिवार की प्रकृति, निवास क्षेत्र व मोबाइल की उपलब्धता का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि महाविद्यालय में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में दोनों संकायों के विद्यार्थियों को समान प्रकार के शैक्षणिक दायित्वों, गृहकार्य, प्रोजेक्ट तथा परीक्षा संबंधी दबावों का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, महाविद्यालय का समान शैक्षिक वातावरण, शिक्षकों का समान व्यवहार तथा मूल्यांकन प्रणाली भी अकादमिक विलंबन के स्तर को समान बनाए रखने में सहायक हो सकती है। इसलिए संकाय का अंतर विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन को विशेष रूप से प्रभावित नहीं कर पाया। जाति वर्ग (सामान्य, पिछड़ा व अनुसूचित जाति) भी विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती। इसके संभावित कारण हो सकते हैं की वर्तमान समय में सभी वर्गों के विद्यार्थियों को लगभग समान शैक्षिक अवसर, तकनीकी, संसाधन तथा अध्ययन संबंधी सुविधाएँ प्राप्त हो रही हैं। विद्यालय में समान पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति एवं मूल्यांकन प्रणाली के कारण विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों में अधिक अंतर नहीं रह गया है।

एकाकी एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में अकादमिक विलंबन समान होने का संभावित कारण हो सकता है कि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमता, अध्ययन आदत, आत्मअनुशासन, रुचि और परिश्रम जैसे कारक उनकी अकादमिक उपलब्धि को अधिक प्रभावित करते हैं। आज के सामाजिक परिवर्तनों के कारण संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के जीवन स्तर, पालन पोषण एवं शैक्षिक वातावरण में भी अधिक अंतर नहीं रह गया है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का अकादमिक विलंबन में अंतर न होने का संभावित कारण हो सकता है कि शिक्षा प्रणाली दोनों क्षेत्रों में लगभग समान रूप से कार्य कर रही है। पाठ्यक्रम परीक्षा प्रणाली एवं अध्ययन का दबाव ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए लगभग समान होता है। इसीलिए विद्यार्थियों के निवास क्षेत्र का अकादमिक विलंबन पर प्रभाव अपेक्षाकृत कम पड़ता है।

मोबाइल की उपलब्धता का भी विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। इसका संभावित कारण हो सकता है कि मोबाइल का प्रयोग लगभग सभी विद्यार्थियों के जीवन का सामान्य भाग बन चुका है, चाहे मोबाइल व्यक्तिगत हो या साझा( common)। दोनों प्रकार के विद्यार्थी शैक्षिक सामग्री, ऑनलाइन कक्षाओं, सोशल मीडिया तथा मनोरंजन तक समान रूप से पहुंच बना लेते हैं। कई बार साझा मोबाइल उपयोग करने वाले विद्यार्थियों को भी पर्याप्त समय तक मोबाइल उपलब्ध हो जाता है,जिससे उनके अध्ययन व्यवहार में विशेष अंतर नहीं आता।

## Reference


[1]. गुप्ता, स., एवं बशीर, ल. (2018). *मैनुअल ऑफ एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन स्केल*. आगरा: नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन।

[2]. गोहेन, र. र., एवं गोगोई, स. (2021). एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन के कारणों का विद्यार्थियों में अध्ययन। *बायोलॉजिकल फोरम: एन इंटरनेशनल जर्नल, 13*(4), 709–715।

[3]. जोश, ल., एवं विजयन, द. (2021). स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन एवं नियंत्रण का केंद्र (लोकस ऑफ कंट्रोल)। *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 9*(3), 151–158।

[4]. ड्राइडेन, डब्ल्यू. (2012). आरईबीटी (REBT) दृष्टिकोण द्वारा टालमटोल से निपटना। *जर्नल ऑफ रेशनल-इमोटिव एंड कॉग्निटिव-बिहेवियर थेरेपी, 30*, 264–281.

[5]. भाटी, ख., बेहरा, ल., एवं गहिर, स. (2024). ओडिशा के स्नातक विद्यार्थियों में एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन एवं शैक्षिक निष्पादन। *नेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, 22*(2), 162–170।

[6]. मालविका, जी., शम्सा, फ., अलन, अ. टी., थारा, एस., वटक्के कंदेग, म. स., सौन्थैर्या, एस., एवं थॉमस, अ. (2025). स्नातक विद्यार्थियों में समय-प्रबंधन एवं एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन के प्रतिरूप। *इंडियन जर्नल ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, 61*(4), 128–133।

[7]. मोहन, न., एवं अथीरा, प. वी. (2023). वयस्कों में एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन, समय-प्रबंधन एवं आत्म-नियंत्रण। *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 11*(2), 2622–2649।

[8]. वारालक्ष्मी, म., एवं रेड्डी, ब. स. क. (2020). महाविद्यालयी विद्यार्थियों में एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन: शैक्षिक चिंता, शैक्षिक तनाव एवं शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता की भूमिका। *पैरिपेक्स–इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च, 9*(8), 112–115।

[9]. सेबास्टाइन, शा. र., अथुल्या, एस. एस., पुलिमूटिल, ए. थॉ., जॉर्ज, र. र., एवं मेनुविन, श्या. (2025). सेंट्रल केरल के मेडिकल विद्यार्थियों में एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन पर एक प्रेक्षणात्मक अध्ययन: *अब या कभी नहीं*। *डीएमआरएस* (*DMRS*). https://journals.lww.com/DMRS

[10]. समुद्रला, व., एवं राम्या, ल. (2024). महाविद्यालयी विद्यार्थियों में इंटरनेट की लत, एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन एवं अनुभूत तनाव। *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 12*(2), 3908–3915।

[11]. सक्सेना, शि., एवं चंद्रा, स. (2024). महाविद्यालयी विद्यार्थियों में एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन व्यवहार। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 6*(3), 1–8।

[12]. फेरारी, ज. र., सिंह, स., एवं मंगले, ड. (2025). भारतीय विद्यार्थियों में आवेगशीलता एवं एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन: शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव। *जर्नल ऑफ बिहेवियरल साइकोलॉजी, 2*(1), 1–12।

[13]. फूक, ल. य. (2010). एक निजी विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी एवं संचार अध्ययन के विद्यार्थियों में आत्ममुखरता (Assertiveness) एवं एकेडमिक प्रोक्रास्टिनेशन का अध्ययन। *अमेरिकन जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च, 9*, 62–71।


## *Cite this Article:*


**प्रो. मधु गुप्ता एवं सुश्री शीतल,** "**जनांकिकीय चरों के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के अकादमिक विलंबन का अध्ययन** ", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 6, pp. 10-17, Jun 2026.*
*Journal URL:* https://vijact.com
***DOI:*** https://doi.org/10.65785/vijact.v2i5.52